thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 44 04 से 10 दिसम्बर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 मा. शु-13

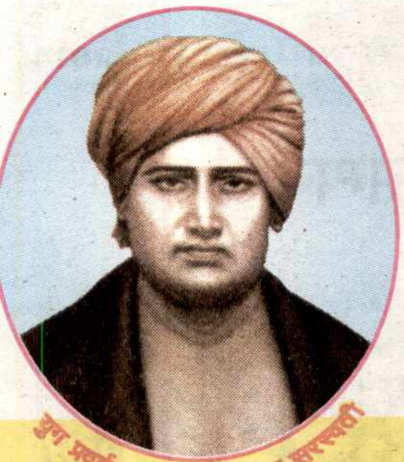

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में युवा निर्माण अभियान का दर्शनीय ऐतिहासिक कार्यक्रम

रोहतक में विशाल युवा शक्ति सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

दस हजार युवाओं को सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध दिलवाया गया सामूहिक संकल्प

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा प्रारम्भ से ही युवाओं को संस्कारित एवं शिक्षित करने का कार्य निर्बाध गति से चलाया जा रहा है। प्रतिवर्ष युवतियों तथा युवकों को चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से नैतिकता, ईमानदारी, समाजसेवा, राष्ट्रभक्ति, ईश्वर भक्ति के संस्कार देकर उनके जीवन की नींव मजबूत की जाती है। वर्तमान में पाश्चात्य जीवनशैली का प्रभाव बड़ी तेजी के साथ युवा जीवन पर दिखाई देने लगा है। खान-पान, विचारधारा, परिधान पर पाश्चात्य संस्कृति पूरी तरह अपना आधिपत्य जमा चुकी है। सत्य, प्रेम अपनी नैतिकता अपने परिजनों को रौंदते हुए आगे बढ़ने की होड़ आज युवाओं में सर्वत्र देखी जा सकती है। युवाओं में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य जैसे शब्दों का कोई मूल्य ही नहीं रह गया है। इन परिस्थितियों में युद्ध स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। युवाओं को भारतीय संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों से जोड़ने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को अनुभव करते हुए 23 नवम्बर, 2014 को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में दीनबन्धु सर छोटू राम खेल स्टेडियम, रोहतक में प्रातः 11 बजे से विशाल युवा शक्ति सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में हरियाणा के कोने-कोने से आये युवाओं तथा छात्र-छात्राओं ने अत्यन्त उत्साह के साथ भाग लिया। हजारों युवक-युवतियों की एक स्थान पर उपस्थिति, दयानन्द के वीर सैनिकों का उमड़ता, हिलोरे लेता उत्साह से परिपूर्ण समुद्र दर्शनीय दृश्य उपस्थित कर रहा था। भव्य मंच और चारों तरफ लगे हुए क्रांतिकारी वाक्यों से लिखे बैनर और सैकड़ों केसरिया ओ३म्ध्वज अपनी आभा तथा प्रेरणा से युवाओं को आकृष्ट कर रहे थे। यह अभूतपूर्व सम्मेलन परम्परा से हटकर एक रचनात्मक तथा व्यवहारिक रूप लिये हुए था। न इसमें वक्ताओं की विशेष संख्या थी और न अधिक औपचारिकता। निश्चित युवा विद्वानों को मंच से विचार देने के लिए आमन्त्रित किया गया था। युवक-युवतियों को इस विशाल सम्मेलन में पहुँचाने में जिन युवाओं ने परिश्रम किया उनको स्मृति-चिन्ह,

अगले पृष्ठ पर जारी है

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

रोहतक में विशाल युवा शक्ति सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

आकर्षक कलेण्डर तथा सत्यार्थ प्रकाश देकर सम्मानित किया गया। रोमांचक एवं अत्यन्त आकर्षक दृश्य तब उपस्थित हुआ जब हजारों युवक–युवतियों ने अपना दायां हाथ आगे करके तथा बायें हाथ में संकल्प पत्र लेकर सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान, युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी द्वारा कराये गये संकल्प को एक स्वर से बोलकर अपने जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, समाजसेवा तथा देशभक्ति के संस्कारों को चरितार्थ करने तथा नशाखोरी (किसी भी प्रकार का नशा) कन्या भ्रूण हत्या, दहेज, अश्लीलता एवं उच्छृंखलता आदि से अपने आपको पूर्णतया दूर रखने और अन्य युवाओं को भी प्रेरित करने की घोषणा को एक साथ दोहराया तथा हजारों युवाओं ने गगनभेदी स्वर के साथ महर्षि दयानन्द के सबसे प्रिय मंत्र "ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद् भद्रं तन्न आसुव" तथा उसका अर्थ बोलकर परमात्मा से प्रार्थना की कि हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्त्ता सब ऐश्वर्य एवं सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए और जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कराइये। इस प्रकार सम्पूर्ण कार्यक्रम का जो महत्त्वपूर्ण भाग था, हजारों युवाओं द्वारा लिया गया संकल्प जिससे युवाओं में एक नये उत्साह एक नई चेतना का अभ्युदय हुआ। रोहतक की जनता ने आर्य वीरों के अदम्य उत्साह और उल्लास को देखकर निश्चित रूप से युवा निर्माण महोत्सव में अपने लाडलों को भेजने का मन बनाया होगा।

इस विशाल युवा शक्ति सम्मेलन का संयोजन आर्य जगत के तेजस्वी, तपस्वी, त्यागी, नव–युवक सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा के अध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के विशेष सहयोगी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने किया। इस अवसर पर मुख्य

अतिथि के रूप में पातंजलि योगपीठ एवं भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के प्रमुख स्तम्भ युवा वैदिक विद्वान् एवं योगगुरु स्वामी रामदेव जी के सम्पूर्ण मिशन के अग्रणी व्यक्तित्व डॉ. यशदेव शास्त्री जी प्रतिष्ठित थे। डॉ. यशदेव जी ने अपने उद्‌बोधन में इस विशाल युवा सम्मेलन के आयोजन के लिए समस्त आयोजकों की हृदय से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में युवाओं को सही संस्कार देना सबसे बड़ी देश सेवा है। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता इस बात ही है कि समाज में फैल रहे पाखण्ड से युवाओं को बचाया जाये। आज देश में पाखण्डियों की पूरी फौज तैयार हो गई है जो भोली भाली जनता को सब्जबाग दिखाकर ठग रही है तथा भारतीय संस्कृति का विनाश कर रही है। उन्होंने इस सम्बन्ध में युवाओं को जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आर्य समाज में चल रहे बिखराव की चर्चा करते हुए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा किये जा रहे एकता प्रयासों की विशेष प्रशस्ति की। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि आर्य समाज को एकसूत्र में संगठित किया जाये। उन्होंने स्पष्ट कहा कि वे इस महत्त्वपूर्ण कार्य में विशेष भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं। आयोजकों की तरफ से उन्हें स्मृति चिन्ह तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए युवाओं का आह्वान किया कि वे अपने जीवन में तप तथा त्याग को अपनाये और जीवन की नींव को मजबूत बनाने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य होता है और आज आपके ऊपर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है, आप सबको दुर्व्यसनों से दूर रहना चाहिए जिससे आप अपना उत्तरदायित्व ठीक से निभा सकें। स्वामी जी ने कहा कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पांच यम हैं जो शाश्वत सार्वभौम महाव्रत कहलाते हैं। ये वैदिक संस्कृति के मूल तत्व हैं इन्हें अपनाना पड़ेगा, इनको अपने जीवन में ढालना पड़ेगा। जब आप सब इन गुणों से विभूषित होंगे तभी पाश्चात्य संस्कृति से मोर्चा ले पायेंगे। स्वामी जी ने आह्वान करते हुए कहा कि जीवन में अच्छे ग्रन्थों का पठन–पाठन करते रहना चाहिए। इससे आत्मिक और मानसिक विकास होता है। इसके अतिरिक्त ईश्वर के प्रति समर्पित व्यक्ति जीवन के उच्चादर्शों को प्राप्त करके जीवन में यथेष्ट सफलता प्राप्त करता है।

इस अवसर पर डॉ. रवि प्रकाश आर्य, प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ ने लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए भारत के गौरवूपर्ण अतीत को जानने एवं समझने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब तक हम वैदिक वांङमय का अनुशीलन नहीं करेंगे, आर्य सांस्कृतिक विरासत तथा मर्यादाओं को नहीं समझेंगे तब तक हम यशस्वी नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि आज युवाओं को सही मार्ग दर्शन की आवश्यकता है और आर्य समाज का यह प्रयास बेहद प्रशंसनीय है। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति दिलाते हुए कहा कि उन्होंने युवाओं को सचेत करने की प्रेरणा दी थी उन्होंने उस समय पर कहा था कि विशेष षड्यन्त्र के तहत युवाओं को बिगाड़ा जा रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दी गई चेतावनी आज सच साबित हो रही है, हमारे युवाओं से तप और त्याग गायब होते जा रहे हैं। आज इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया द्वारा अपने अश्लील कार्यक्रमों के द्वारा युवाओं को पथभ्रष्ट किया जा रहा है तथा इस कार्य को करने में उन्होंने अपनी पूरी ताकत झोंक रखी है। उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि पाश्चात्य संस्कृति के फैलाव को रोकने की आवश्यकता है और आप सब यह संकल्प लें कि पाश्चात्य जीवनशैली को नहीं अपनायेंगे और न ही इसे पनपने देंगे। उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का यह कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। उन्होंने युवा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी की हृदय से प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वामी जी वर्षों से युवा निर्माण के अभियान में लगे हुए हैं और उनके नेतृत्व में उनकी टीम पूर्ण समर्पण भाव से रात दिन कार्य कर रही है। आप सब बधाई के पात्र हैं।

उन्होंने कहा कि स्वामी जी जो

शेष पृष्ठ 5 पर

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

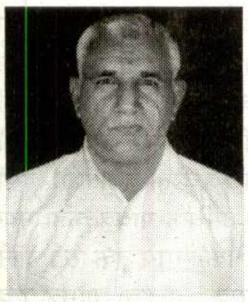

केरल में मुसलमानों के आतंकवाद से, मीनाक्षीपुरम की घटना से, बृहद स्तर पर कराये गये धर्मांतरण से, हिन्दू जनता संत्रस्त रहीं धर्मांतरण और लव-हिजाद के नाम पर विदेशी धन के बल पर जो मुसलमानों की ओर से किया जा रहा है उस पर अदालतें भी सख्त टिप्पणी कर चुकी हैं। मध्य प्रदेश में नियोगी कमेटी ने ईसाई मिशनरियों द्वारा किये जा रहे बलात व प्रलोभित धर्मांतरण पर जो विस्तृत रिपोर्ट तैयार की थी उससे समस्या की भयावहता प्रकट हुई थी। साम्प्रदायिकता का यह इतिहास और चेहरा अत्यंत कुरूप, विकृत, झकझोरने वाला है। ये न स्टेन को जीवित छोड़ती है, न स्वामी लक्ष्मणानन्द को। न मन्दिर जलने से बचते हैं न चर्च।

साम्प्रदायिकता से तात्पर्य है अपने पंथ, अपनी भाषा, अपनी सभ्यता-संस्कृति, अपने इतिहास, अपनी परम्परा, अपनी वेश-भूषा, अपने खान-पान पर इतना गर्व और अहंकार प्रदर्शित करना, उन पर इतना अधिक बल देना, उनके प्रति इतना संगठित व सक्रिय होना कि दूसरे समुदाय के लोग अपने को असहज, असुरक्षित, आतंकित, शोषित व ठगा-सा महसूस करने लगें। इस साम्प्रदायिकता का पोषण जब विदेशी आका और विदेशी धन करने लगता है तो स्थिति विस्फोटक बन जाती है। मुस्लिम, ईसाई, संघ, विश्व हिन्दू परिषद् व सिख मिशनरीज को ये दोनों प्रकार की सहायता हमेशा से उपलब्ध रही हैं। हिन्दू संगठन जिन तेवरों के साथ 'हिन्दुत्व' की व्याख्या करते हैं उससे बौद्ध, दलित, सिख, जैनी, आर्यसमाजी और रामकृष्ण मिशन से जुड़े लोग अक्सर बिदक जाते हैं। साम्प्रदायिकता से प्रभावित संगठन, पंथ, समुदाय या बिरादरी प्रायः मुख्य राष्ट्रीय धारा से बाहर जाकर कानून-व्यवस्था को अपने हाथ में लेकर, बिना किसी मुद्दे पर गम्भीरता से विचार किये, उन्मादग्रस्त होकर सड़कों पर उतर कर उपद्रव करते हैं। आगजनी, बाजारों की लूटपाट, अपहरण, बलात्कार, जबरन धर्मांतरण, जबरन विवाह, हत्या इन उपद्रवों के स्वाभाविक परिणामों के रूप में सामने आते हैं। किसी अपराधी को प्रायः सज़ा इसलिए नहीं मिलती कि पुलिस और प्रशासन जनता व राजनेताओं के दबाव में होता है। दलगत अर्थात् चुनावी राजनीति कभी हकीकत सामने लाने नहीं देती। यह खुद में एक बड़ी घिनौनी साम्प्रदायिकता है, जो साम्प्रदायिक तत्त्वों को संजीवनीपान कराती है। सन् 1984 के सिख विरोधी दंगों के असल अपराधी आज तक खुले घूम रहे हैं लेकिन पंजाब में दस साल तक खून की होली खेलने वाले, दुकानदारों को लूटने वाले, अपहरण कर फिरौतियां मांगने वाले क्या सज़ा पा सके हैं?वे क्या आज भी ऐशो आराम का जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं?हत्यारों को शहीदों का दर्जा देकर आखिर हम क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

साम्प्रदायिकता अपने विरोधी के सन्दर्भ में ही उभर कर सामने नहीं आती बल्कि अपने ही समुदाय में भी फूट, विभाजन, संघर्ष और विष घोल देती है। मूल स्वरूप में साम्प्रदायिकता अहंकार और स्वार्थपरता से पैदा होती है। सत्ता और प्रतिष्ठान पर कब्जा करने की महत्त्वाकांक्षा भी साम्प्रदायिकता को पोषित करती है। साम्प्रदायिकता में अलगाव की प्रवृत्ति रहती है क्योंकि वह अपने को ही सर्वश्रेष्ठ और अंतिम सत्य होने का भ्रम पाले रहती है। दुनिया के सभी प्रमुख पंथ और मजहब साम्प्रदायिकता के शिकार हुए हैं क्योंकि उनका खुद का जन्म साम्प्रदायिकता की कोख से हुआ होता है। ईसाई धर्म आज अनेक सम्प्रदायों में विभाजित है। अहिंसा को मानने वाले ईसाई धर्म में कैथोलिक और प्रोटैस्टैंटों के बीच लगभग सौ वर्ष तक खूनी संघर्ष चला जिसमें दोनों पक्षों के लाखों इंसानों की नृशंस हत्याएँ हुईं। इस्लाम लगभग चार सौ सम्प्रदायों में विभाजित हो चुका है। शिया और सुन्नी दोनों मुसलमान हैं लेकिन दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हैं। इराक में आज मुसलमान से मुसलमान लड़ रहा है। बंग्लादेशी मुसलमान ही थे लेकिन पाकिस्तानी मुसलमानों ने उनका शोषण जिस तरह से हर स्तर पर किया उससे खौफजदा होकर ही उन्होंने पाकिस्तान से बगावत कर आजादी हासिल की। मुस्लिम कट्टरवादियों से कभी सूफियों की नहीं बन पाई। इसी कारण सरमद और मंसूर जैसे सूफी फकीरों को सूली पर चढ़ाया गया। यजीद के बेरहम सैनिकों ने हजरत मोहम्मद साहब के नवासे शाह हुसैन को कर्बला के मैदान में जिस बेरहमी से शहीद किया वह वास्तव में लोमहर्षक किस्सा है। पाकिस्तान में अहमदिया मुसलमानों को इस्लाम विरोधी मान कर उनके विरुद्ध जो दुर्व्यवहार किया जाता रहा है वह अत्यंत निन्दनीय है। वहाँ कि 23 प्रतिशत हिन्दू जनसंख्या घटते-घटते 2 प्रतिशत तक आ पहुँची है बलात धर्मपरिवर्तन व आतंक के कारण। ज्ञान के

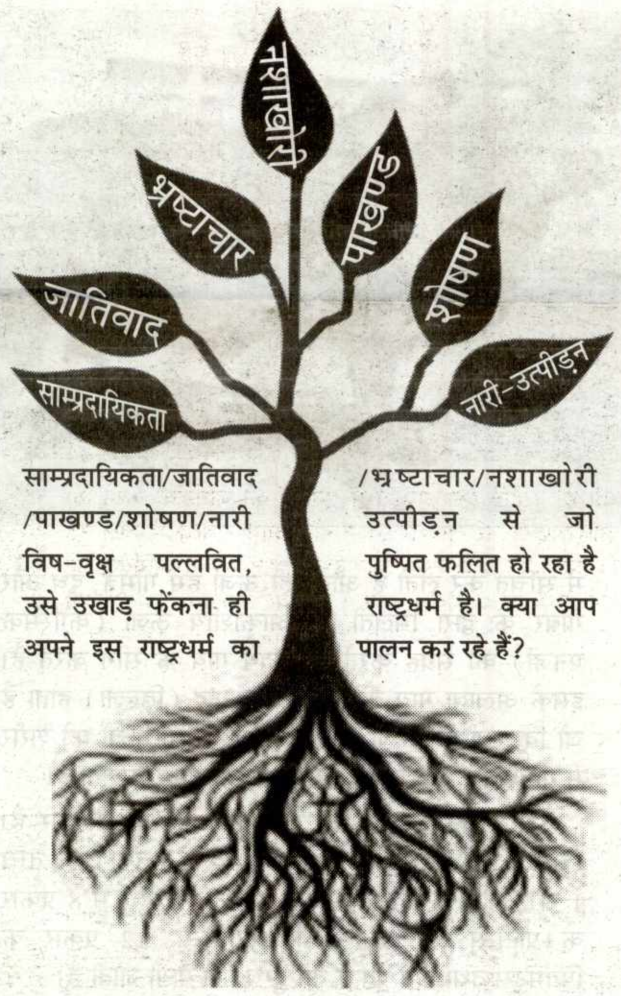

भण्डार पुस्तकालयों को आग के हवाले करके मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने यही संदेश देने का गुनाह किया कि जो लकीर इस्लाम ने खींच दी है उससे बड़ी लकीर कोई और हो ही नहीं सकती। इसी प्रकार बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, हिन्दू धर्म जो वास्तव में धर्म न होकर पंथ व सम्प्रदाय हैं विभाजन के शिकार हुए हैं। निरंकारियों के धर्मगुरुओं को मार कर जो उत्पात सिखों ने मचाया उसे भुलाया नहीं जा सकता। बौद्ध धर्म हीनयान और महायान दो मुख्य धाराओं में प्रवाहित हुआ। जैन धर्म में दिगम्बर और श्वेताम्बर दो शाखाएँ फूटीं। हिन्दू धर्म तो शैव, वैष्णव आदि न जाने कितने सम्प्रदायों में विभाजित है। सम्प्रदाय जब अपने प्रति न्याय नहीं कर सके तो दूसरों के प्रति उदार, सहिष्णु, विनम्र कैसे रह सकते हैं?हिन्दू-बौद्धों के बीच का, सिखों-मुसलमानों के बीच का रक्त-रंजित इतिहास इसका साक्षी है।

सम्प्रदाय चूँकि मूल नहीं किसी पूर्व धर्म की विभाजित और विकसित शाखा होते हैं, किसी पुरानी परम्परा का संशोधित अंश होते हैं इसलिए उनमें उत्साह, संघर्षशीलता, कट्टरता, अनुदारता, अहंकार, अपने को सही मानने की सनक अधिक होती है। अपने को स्थापित करने के प्रयास में वे साम, दाम, दण्ड, भेद की सभी नीतियाँ अपनाते हैं, आत्मदर्शन के बजाय तन्त्र पर अधिक केन्द्रित होते हैं, किसी से कुछ सीखने के बजाय दूसरों को सिखाना अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं, अहिंसा के बजाय हिंसा को अधिक अपनाते हैं, धर्मांतरण को अधिक महत्त्व देते हैं, सत्ता प्रतिष्ठानों पर कब्जा करने को अधिक लालायित रहते हैं, अपनी भाषा, अपना लिवास, अपना खानपान दूसरों पर लादने को अधिक उत्सुक रहते हैं। गुणवत्ता और विकास पर नहीं विस्तारवाद पर उनका अधिक विश्वास रहता है। तर्क, विज्ञान, तुलनात्मक अध्ययन, परम्परा का निर्वहन, सत्यं शिवं सुन्दरम की दरकार, नीर-क्षीर विवेक, अध्यात्म-परक दृष्टिकोण इन सबसे उसका परहेज रहता है। आस्था, श्रद्धा और विश्वास की उसकी अपनी गढ़ी परिभाषा होती है अतः दूसरों की कसौटियों को वह अमान्य ठहराता है।

कोई विचारधारा धर्म से अनुस्यूत है अथवा सम्प्रदाय से अभिभूत है इसे परखने की केवल एक ही कसौटी है और वह कसौटी है – मानव धर्म जो महर्षि पतंजलि प्रणीत योग-दर्शन में यम-नियम से शब्द निबद्ध है। यम पांच हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा व सत्य का पालन करना धर्म है, किसी भी प्रकार की चोरी न करना अस्तेय है, आवश्यकता से अधिक किसी भी वस्तु का संग्रह न करना अथवा अपनी जरूरतों को कम करना जो सात्विक जीवन के लिए हितकर है अपरिग्रह है, ब्रह्म का अर्थ है ईश्वर, वेद और वीर्य। चर्य का अर्थ है चिन्तन, स्वाध्याय और रक्षण। अतः ब्रह्मचर्य के तीन अर्थ हुए ब्रह्म-चिंतन, वेदाध्ययन और वीर्य-रक्षण जो हमारे तेज, ओज, ज्ञान का मुख्य स्रोत हैं। यम सार्वत्रिक धर्म के, वैश्विक धर्म के, मानव धर्म के पांच मुख्य स्तम्भ हैं जिनका पालन अनिवार्यतः प्रत्येक मनुष्य, प्रत्येक विचारधारा और व्यवस्था को हर सूरत में करना ही चाहिए। नियम भी पांच हैं जो संतोष, शौच, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान कहलाते हैं। जो पुरुषार्थ और प्रारब्ध से प्राप्त हुआ उसी को ईश्वर का प्रसाद, कर्मफल, भाग्य समझ कर स्वीकारना, उस पर संतुष्ट रहना, अधिक के लिए छीना-झपटी न करना, भ्रष्टाचार न अपनाना, अनैतिक कदम न उठाना, सदाचारी बने रहना संतोष है। मनसा, वाचा, कर्मणा अपने को शुद्ध, पवित्र, निर्मल रखना शौच है। संयम, त्याग, निष्ठा, श्रद्धा, परिश्रम और ईमानदारी का ऐसा जीवन जीना जो दूसरों के लिए आदर्श बन सके तप है। आत्म चिन्तन, ब्रह्म चिन्तन, सद्ग्रन्थों का अध्ययन, सत्संग, आध्यात्मिक संवाद करना स्वाध्याय कहलाता है। मनसा, वाचा, कर्मणा अपने को ईश्वर के प्रति समर्पित करके आध्यात्मिक जीवन, सात्विक जीवन, अनासक्त जीवन जीना ईश्वर-प्रणिधान है। नियम वैयक्तिक धर्म है जिसका पालन करने से व्यक्ति का अपना निज का सुधार, उत्थान, कल्याण होता है। वह एक आदर्श नागरिक बनता है। उसके आचार-विचार की सकारात्मक तरंगें समाज को सुवासित रखती हैं, भले ही वह समाज को सीधा नेतृत्व न भी दे। हम अपने प्रति ही नहीं समाज, राष्ट्र और विश्व के प्रति भी जिम्मेदार हैं अतः व्यष्टिगत और समष्टिगत उत्थान के प्रति हमारा भी एक नैतिक दायित्व है जो यम-नियम का पालन करने से पूरा होता है।

मानव धर्म की इस सर्वमान्य, परम्परागत और प्रामाणिक कसौटी पर ही किसी व्यक्ति, विचारधारा, व्यवस्था, प्रतिष्ठान और पंथ-मजहब को परखा जा सकता है कि वास्तव में वह कितना धार्मिक है। जीवन से यदि हम अध्यात्म को निकाल दें और केवल कुछ अनुष्ठानों, रूढ़ियों, औपचारिकताओं, पंथिक रीति-रिवाजों से चिपटे रहें तो उससे भी हमारा जीवन धर्म तत्त्व से शून्य रहेगा क्योंकि अध्यात्म धर्म की संजीवनी है जिसके बिना वह जीवित ही नहीं रह सकता। इस दृष्टि से सम्प्रदाय किसी व्यक्ति विशेष अथवा समूह विशेष के लिए भले ही महत्त्वपूर्ण हों लेकिन समग्र समाज के लिए उसकी कोई अहमियत नहीं है। प्रकृति पंच-महाभूतों के रूप में अपनी परोपकारिता से समष्टिगत धर्म का संदेश गुंजाती है अतः समाज की पंथ, मजहब, सम्प्रदाय पर निर्भरता वैसे भी कोई अर्थ नहीं रखती। मानव जाति ने जितना प्रकृति से सीखा है और जितना प्रकृति से सीख सकती है उसमें अंशमात्र भी योगदान मजहबों-पंथों-सम्प्रदायों का नहीं रहा, न रह सकता है। वस्तुतः साम्प्रदायिकता मानसिक पराधीनता का पर्याय बन चुकी है। जो मानवजाति को विभाजित ही नहीं करती, उन्हें आपस में लड़वाती भी है। मानव जाति का जितना विनाश तलवारों, तोपों, गोलियों, बमों से हुआ है उससे कहीं अधिक विनाश साम्प्रदायिकता ने किया है। विज्ञान ने हमें चांद पर चलना सिखा दिया है लेकिन साम्प्रदायिकता ने मानव को धरती पर चलना तक नहीं सिखाया है। अतः हर मानवता प्रेमी का दायित्व बनता है कि किसी भी सूरत में साम्प्रदायिकता को प्रश्रय न दे, प्रोत्साहित न करें, अधिमान न दे। यह मानव धर्म की ओर उठा उसका पहला कदम होगा।

शेष अगले अंक में

गाय एक अद्भुत रसायनशाला

– श्री रोशनलाल जी पाल

जननी *जनकर दूध पिलाती, केवल साल छमाही भर।*

गोमाता पय सुधा पिलाती, रक्षा करती जीवन भर।।

अभी कुछ समय पहले एक पुस्तक अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा प्रकाशित हुई थी, The Cow is a wonderful laboratary (गाय एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है)। इस पुस्तक में भी सिद्ध किया गया है कि प्रकृति ने समस्त जीव-जन्तुओं और सभी दुग्धारी पशुओं में से केवल गाय ही एक ऐसी पैदा की है, जिसे लगभग 180 फुट (2160 इंच) लम्बी आंत दी है। अन्य पशुओं या जीवधारियों में यह विशेषता नहीं है। यही कारण है कि गाय जो कुछ भी खाती या पीती है, वह इस लम्बी आंत से होकर अंतिम छोर तक जाता है।

जैसे दूध से मक्खन निकालने वाली मशीन में जितनी अधिक गरारियां लगाई जाती हैं, उससे उतना ही अधिक एवं शुद्ध फैट का मक्खन निकलता है, वैसे ही प्रकृति ने भी गाय की शारीरिक संरचना में सबसे लम्बी आंत दी है, जिससे उसका दूध अन्य दूध देने वाले पशुओं से अधिक श्रेष्ठ होता है। संक्षेप में गोवंश की विशेषताएं इस प्रकार हैं :-

गोवत्स - गाय प्रजनन (बच्चा जनने) के बाद 18 घण्टे तक उसके साथ रहे और उसे चाटती रहे तो वह उस बच्चे (बछड़ा-बछड़ी) को जिन्दगीभर भूलती नहीं है। इसी प्रकार गोवत्स भी सैकड़ों गायों के बीच में से अपनी माता को ढूंढकर दुग्धपान करता है, जब कि भैंस का बच्चा अपनी माँ को ढूँढ़ नहीं पाता।

खीस - प्रजनन के तुरंत बाद गाय के स्तनों से जो दूध निकलता है, उसे खीस, चीका, कीला या पेवस कहते हैं। देखने में यह दूध के समान ही होता है, परन्तु संरचना तथा गुणों में बिलकुल भिन्न होता है। सामान्य रूप से गरम करने पर तुरंत फट जाता है। इसीलिए इसे मिल्क केक बनाने की प्रक्रिया द्वारा पकाकर उपयोग में लेते हैं। प्रजनन के बाद 15 दिनों तक इसमें दूध की अपेक्षा प्रोटीन तथा खनिज तत्वों की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा लेक्टोज, वसा एवं पानी की मात्रा कम होती है। खीस में दूध की अपेक्षा केसीन और एलब्यूमिन की मात्रा दोगुनी, ग्लोब्यूलिन की मात्रा 12 से 15 गुनी तथा एल्यूमिनियम की मात्रा 6 गुनी अधिक होती है। सामान्य दूध की अपेक्षा खीस में खनिजतत्व भी अधिक होते हैं।

सींग - गाय की सींगों का आकार सामान्यतः पिरामिड जैसा होता है। वह एक शक्तिशाली एन्टीना के रूप में है। सींगों की मदद से गाय आकाशीय सभी ऊर्जाओं को शरीर

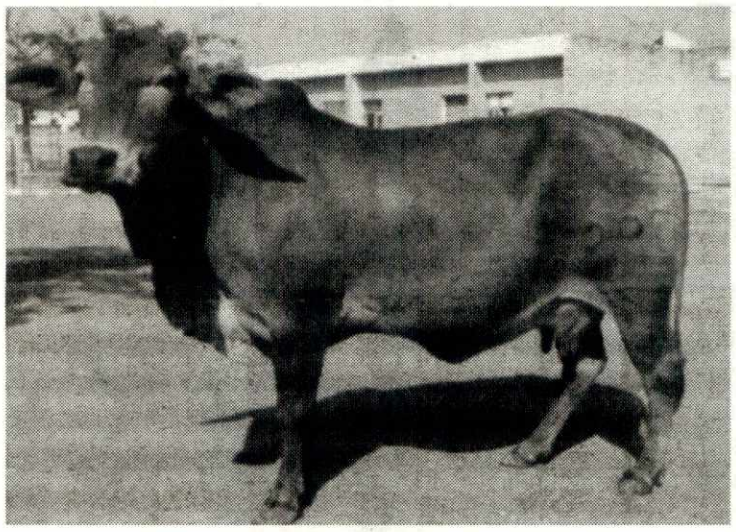

में संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गोमूत्र, दूध और गोबर के द्वारा मिलती है। आकाशीय ऊर्जा (कोस्मिक एनर्जी) को संग्रह करने का कार्य गाय के सींग करते हैं। इसके अलावा गाय की पीठ पर ककुद (ढिल्ला) होता है जो कि सूर्य की ऊर्जा और कई आकाशीय तत्वों को शरीर में ग्रहण कर गोमूत्र, दूध तथा गोबर द्वारा हमें मिलता है।

गाय का दूध - यह पौष्टिक तत्वों का भण्डार है। इसमें जल 87, वसा 4, प्रोटीन 4, शर्करा 5 तथा अन्य तत्त्व 1 से 2 प्रतिशत तक पाये जाते हैं। गाय के दूध में 8 प्रकार के प्रोटीन्स, 11 प्रकार के विटामिन्स, 12 प्रकार के पिगमेंट्स तथा तीन प्रकार की दुग्ध गैसें पायी जाती हैं।

गाय के दूध में केरोटीन नामक पदार्थ भैंस के दूध से दस गुना अधिक होता है। भैंस का दूध गरम करने पर उसके सर्वाधिक पोषक तत्व मर जाते हैं, जबकि गाय के दूध को गरम करने पर भी पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते हैं।

गाय का मूत्र - गोमूत्र को आयुर्वेद में बड़ा ही उपयोगी बताया गया है। कुशल वैद्य अपनी आयुर्वेदिक दवाएं (गोलियां) बनाने में जल के स्थान पर गोमूत्र का ही प्रयोग करते हैं। गोमूत्र में कार्बोलिक एसिड होता है, जो कीटाणुनाशक है और शुद्धता एवं स्वच्छता बढ़ाता है, इसी कारण प्राचीन ग्रन्थों में इसे सबसे अधिक पवित्र कहा गया है। गंगाजल के समान इसे अधिक समय तक रखे जाने पर भी खराब नहीं होता। इसके अलावा गोमूत्र एवं गोदुग्ध में भी स्वर्णक्षार मौजूद रहता है, जो अति उपयोगी रसायन है।

अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों तथा आधुनिक दृष्टि से गोमूत्र नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटैशियम, सोडियम और लेक्टोज होता है। इसके अलावा इसमें सल्फर, अमोनिया, लवणसहित विटामिन एबीसीडीई, एन्जाइम आदि तत्त्व भी हैं। ये तत्त्व ही विभिन्न रोगों में अनुपान भेद एवं मात्रा भेद के साथ प्रयुक्त होकर व्यक्तियों को बचाते हैं।

देशी गाय के गोबर-मूत्र-मिश्रण से प्रोपीलीन आक्साइड नामक गैस उत्पन्न होती है, जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है। गोमूत्र में कुल 16 प्रकार के मुख्य खनिज तत्व होते हैं, जो शरीर के रक्षण, पोषण और विकास में सहायक हैं। इसके समुचित सेवन से रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है और शरीर शक्तिशाली एवं चेतनायुक्त होता है। अनेक शोधों एवं परीक्षणों में इसमें सूक्ष्म रूप से चांदी तत्त्व भी पाया गया है, जो स्वास्थ्य रक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

गाय का शरीर - गाय के शरीर के रोम-रोम से गुग्गुल जैसी पवित्र सुगन्ध आती है। उसके शरीर से अनेक प्रकार की वायु निकलती है, जो वातावरण को जन्तुरहित करके पवित्र बनाती है। गाय को रीठे के जल से नहलाने से उसको और अधिक आनन्द का अनुभव होता है। गाय के इन्हीं गुणों को देखकर कहा जाता है -

जा घर होय तुलसी अरु गाय।
ता घर वैद्य कबहुँ ना जाय।।

– गोग्रास से साभार

बेटियों की बात ही कुछ और

– मेखला गुप्ता

मम्मी ने सुधा आंटी से पूछा– 'इतनी दुपहरी में कैसे आई आप' आंटी धीरे से बोलीं– 'बस मैं ही आ सकती हूं।' मम्मी ने कहा– 'बता देतीं तो इसे ही भेज देती।' आंटी सकुचाई – 'अरे नहीं, इसी बहाने थोड़ा घूमना–फिरना हो जाता है।' मम्मी ने उन्हें लंच के लिए रोक लिया। लंच में गरम–गरम फुल्के खाते हुए आंटी के मुंह से निकला– 'जाने कितना समय हो गया ऐसे फुल्के खाए।' आंटी ने खाना खाया और आशीष देती हुई जाने लगीं। मैं अपनी स्कूटी पर उनको घर छोड़ आई।

आंटी को छोड़कर आई तो मम्मी थोड़ी उदास नजर आई। मैंने पूछा– 'मां, जब भी आंटी आती हैं, आप उदास क्यूं हो जाती हैं' मम्मी अतीत के पन्ने पलटने लगीं– 'मैंने और मिसेज सुधा ने एक साथ स्कूल जॉइन किया था। दोनों के बच्चे छोटे छोटे थे। मेरे पास तुम तीनों बेटियां और इनके पास दो बेटे।

इन्होंने अपने बेटों के लिए सारी खुशियां न्यौछावर कर दीं। जब भी बात होती, कहतीं– अरे जब बेटे हैं, तो भविष्य की तो चिंता है नहीं। तुम तीनों नौकरी पर लग गईं। इनके बेटे भी नौकरी में आ गए। उन्होंने खुद एक साड़ी में काम चलाया पर बच्चों को पूरे तरीके से पाला। घर में पति–पत्नी का गाढ़ा पसीना और कमाई लग गई। बच्चे भी पढ़ने में तेज निकले। एक इंजीनियर बना तो दूसरे ने भी खूब पढ़ाई की। दोनों को लगा कि अब उनके दुख के दिन बीत गए। लेकिन असली लड़ाई तो अब शुरू हुई थी। बड़े बेटे ने विदेश में नौकरी कर ली और छोटा बेटा अचानक एक्सीडेंट में मानसिक संतुलन खो बैठा। मां–बाप ने रही सही कमाई उसके इलाज में लगा दी। एक दिन मिसेज सुधा और उनके पति को पता चला कि उनके बेटे ने विदेश में किसी को बिना बताए ही अपनी सहकर्मी के साथ शादी कर ली है। पूछने पर उसने सीधा ताना भी दिया कि अपनी फैमिली को सबके सामने इंट्रोड्यूस करने में मैं झिझक रहा था। पिता ने विरोध करना चाहा तो सुधा जी ने उन्हें रोक लिया।' माँ ने पूरा किस्सा बताया– एक दिन उनके बेटे ने कहा, आप दादा–दादी बनने वाले हैं। वे बेचारे फौरन उसके दिए जख्मों को भूल उसकी खुशी में शामिल हो गए। बेटे ने बहला–फुसला कर घर को अपने नाम करा लिया। फिर एक दिन बहुत ही उखड़े मूड में आकर बोला– आपको यह घर खाली करना होगा। वे सकते में थे– अब इस उम्र में हम कहां जायेंगे?बोला– ये मैं नहीं जानता। मैं इस घर को फिर बनवा रहा हूं। अब हमारा परिवार भी बढ़ेगा। जगह तो चाहिए। दूर–दूर से इतने बड़े लोग आते हैं मिलने, आप लोगों से कैसे मिलाऊंगा।

पिता ने कहा घर मेरे नाम है, तो उसने ढिठाई से रजिस्ट्री दिखा दी– यह घर अब मेरे नाम पर है। आप रहना चाहते हैं तो आपके लिए आउट हाउस में एक कमरा बनवा देता हूँ। सुधा जी और उनके पति ने फिर समझौता कर लिया। वे चुप से चुप होते गए। सुधाजी अब ठंडी आह भरकर मम्मी से कहतीं– सुशीला तुम बहुत नसीब वाली हो कि तुम्हारी बेटियाँ हैं। तुमने बहुत अच्छे कर्म किए थे, जो बेटियाँ मिलीं। कभी तुम्हें बेटे का ख्याल भी आए तो मुझे याद कर लिया करो। मम्मी ने लंबी सांस भरते हुए कहा– दूसरों के दिए घाव तो समय के साथ भर जाते हैं, पर अपनों के दिए घाव जीवन भर नहीं भरते।

– नवभारत टाइम्स से साभार

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

पृष्ठ–2 का शेष

रोहतक में विशाल युवा शक्ति सम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

भी उत्तरदायित्व मुझे सौंपेंगे उसे पूर्ण निष्ठा से मैं निभाऊँगा।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह ने अपील की कि आप सब अपने जीवन में गरीबों, असहायों तथा बेजुबानों के प्रति संवेदनशील बनें। उन्होंने कहा कि समाज के बहुत बड़े हिस्से को शिक्षा और सामाजिक दृष्टि से वंचित रखा गया है उनको मुख्यधारा में लाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए। उन्होंने चरित्रवान होने की कसौटी बताते हुए कहा कि ईमानदारी का होना, नैतिक मूल्यों को अपनाना तथा दूसरों के सुख-दुख में भागीदार बनना और दुःखों को दूर करने का प्रयास जो लोग करते हैं वे चरित्रवान कहे जाते हैं, आप सबको इन मूलभूत विचारों को अपनाना होगा तथा अपने आपको चरित्रवान बनाना होगा।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के उपाध्यक्ष तथा हरियाणा के युवा क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में जबकि पाखण्ड, भ्रष्टाचार, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी में आज का युवा गहरे तक धंसता जा रहा है हमें आर्य समाज के लिए समर्पित भाव से कार्य करना है। उन्होंने कहा कि सौभाग्य से आर्य समाज के पास एक ऐसा तेजस्वी, कर्मठ नेता मौजूद है जो आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के मिशन को राष्ट्रीय जीवन में मूर्तिमंत करने की इच्छा शक्ति से भरपूर है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद का स्वामी आर्यवेश जी ने जब से पदभार सम्भाला है वक्त ने करवट बदली है। आज हमारा देश नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड, जातिवाद जैसी व्याधियों से ग्रस्त है और उससे मुक्त कराने का मानसिक और बौद्धिक बल केवल आर्य समाज के पास है। आज हजारों युवाओं को एक साथ देखकर यह आशा और भी बलवती हुई है। इस प्रकार के कार्यक्रमों के द्वारा राष्ट्रीय पटल पर जन-जागरण और लोक चेतना जागृत करने के लिए हम कृत संकल्पित हैं।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री युवा नेता श्री विरजानन्द जी ने अपने जोशीले वक्तव्य में पाखण्ड एवं अन्धविश्वास पर कटाक्ष करते हुए युवाओं को प्रेरित किया कि वे धर्म के नाम पर चल रहे अन्धविश्वास और अवैज्ञानिक मत-सम्प्रदायों के चक्कर में न आयें। उन्होंने कहा कि इतिहास इस बात का साक्षी है कि युवा ही परिवर्तन किया करते हैं। सड़ी-गली व्यवस्था को बदलने के लिए तथा साम्प्रदायिकता, जातपात, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, शोषण, पाखण्ड और नारी उत्पीड़न के मुद्दे हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने खड़े हैं और इनके समाधान की जिम्मेदारी आर्य युवाओं पर निर्भर करती है। आज युवाओं को चुनौतियों का सामना करने के लिए मजबूती से खड़ा होना है। उन्होंने कहा कि आज का यह ऐतिहासिक कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा है और इस प्रकार के कार्यक्रम प्रत्येक जिले में आयोजित किये जायेंगे।

बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने समाज में व्याप्त नर-नारी असमानता, कन्या भ्रूण हत्या एवं महिलाओं पर होने वाले विभिन्न प्रकार के अत्याचारों की कड़े शब्दों में निन्दा की। उन्होंने कहा कि किसी भी सभ्य समाज या विकसित समाज में नर और नारी के बीच भेद नहीं हो सकता है, बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं समझा जाना चाहिए, लेकिन हमारा देश कहने को तो विकसित देशों की श्रेणी में आता है लेकिन महिलाओं के मामले में हम आज भी बहुत पिछड़े हुए हैं। आज भी महिलाओं को उपेक्षित किया जा रहा है। महिलाओं को कोई बड़ा निर्णय लेने में आज भी भागीदार नहीं बनाया जाता तथा चौपालों में महिलाओं के बैठने तक पर पाबन्दी है। यह बड़ी विडम्बना है कि आज भी महिलाओं को कमजोर, अबला असहाय समझा जा रहा है। उन्होंने कहा कि बलात्कार छेड़खानी या अन्य

आपराधिक घटनाओं से पूरा समाज त्रस्त है लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इसके लिए भी महिलाओं को ही दोषी करार दिया जाता है। समाज के प्रबुद्ध कहलाये जाने वाले लोग लड़कियों के पहनावे, चाल-ढाल तथा जीवनशैली पर सवाल उठाते हैं कि उन्के लिए विशेष आचार संहिता लागू की जाये कि वे स्वच्छन्द न रहें। लेकिन लड़कों के ऊपर किसी भी प्रकार की आचार संहिता लागू नहीं होती। यह एकतरफा दृष्टिकोण ही इन सबके लिए जिम्मेदार है। उन्होंने बताया कि हमने हजारों लड़कियों में नैतिक मूल्यों के भाव भरकर स्व-रक्षा के लिए तैयार किया है। सैकड़ों गांवों में जाकर विद्यालयों महाविद्यालयों में जाकर महिलाओं को कन्या भ्रूण हत्या के बारे में जागरूक किया है। उन्होंने कहा कि इस विशाल सम्मेलन में लड़कों तथा लड़कियों की संख्या लगभग बराबर है यह अच्छा संकेत है लेकिन युवा निर्माण के अभिनव प्रयास को और अधिक सक्रियता प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि इस अभियान को पूरी शक्ति लगाकर आगे बढ़ाने में सहयोग किया जायेगा।

बेटी बचाओ अभियान की महामन्त्री बहन प्रवेश आर्या ने युवतियों का आह्वान किया कि वे शालीनता, संयम, अनुशासन तथा नैतिकता को अपने जीवन में विशेष स्थान दें क्योंकि उनके जीवन में इन गुणों की बहुत महत्ता है। उन्होंने कहा कि समाज रूपी रथ के स्त्री और पुरुष दो पहिये होते हैं यदि इसमें से एक पहिया कमजोर पड़ गया तो रथ चल नहीं पायेगा अतः अपने को ताकतवर बनायें, अपने जीवन में साहस पैदा करें और आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि लड़की दो घरों में प्रेरणा का कार्य करती है लड़कियां संस्कारित होंगी तो दो घरों का निर्माण होगा।

सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री ने सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के इस क्रान्तिकारी अभियान की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की तथा आयोजकों का साधुवाद करते हुए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर क्रांतिकारी अतर सिंह, स्वामी सोम्यानन्द, श्री धर्मवीर दहिया, प्रिं. आजाद सिंह, कु. किरण आर्या, श्री जयसिंह ठेकेदार आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी गला खराब होने के कारण उद्बोधन नहीं दे सके उनके विचारों तथा निर्णयों को ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह युवा शक्ति सम्मेलन निर्णय करता है कि इसी दिसम्बर मास में एक लाख युवाओं से संकल्प पत्र भरवाये जायेंगे। 14 दिसम्बर को जीन्द में आयोजित प्रान्तीय महासम्मेलन में नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या तथा पाखण्ड के विरुद्ध भावी जन जागरण कार्यक्रम की घोषणा की जायेगी। फरवरी, 2015 में हरियाणा में जन-जागरण अभियान यात्रा निकाली जायेगी जो 21 जिलों से होकर गुजरेगी यात्रा के चण्डीगढ़ पहुँचने पर सरकार से जोरदार मांग की जायेगी कि प्रदेश में शीघ्र नशाबन्दी लागू की जाये। कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए सख्त कानून बनाये जायें तथा कन्या को गर्भपात के द्वारा मारना भारतीय दण्ड संहिता की धारा-302 के तहत हत्या माना जाये। इसके अतिरिक्त जिस परिवार में लड़की पैदा हो उसको एक लाख रुपये लड़की के नाम से प्रदान किये जायें। धर्म के नाम पर चल रहे किसी संगठन की सकल जांच कराई जाये जिसमें शस्त्रों का जखीरा अथवा आपराधिक कृत्यों की सूचना हो जिससे समय रहते उस पर अंकुश लगाया जा सके।

इससे पूर्व प्रातःकाल विशेष यज्ञ आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में आयोजित किया गया उन्होंने सभी युवकों को आशीर्वाद दिया तथा तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी होने की प्रेरणा प्रदान की।

महर्षि दयानन्द के गगनभेदी नारों के साथ कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभी युवाओं को नये वर्ष का आकर्षक कलेण्डर भेंट किया गया।

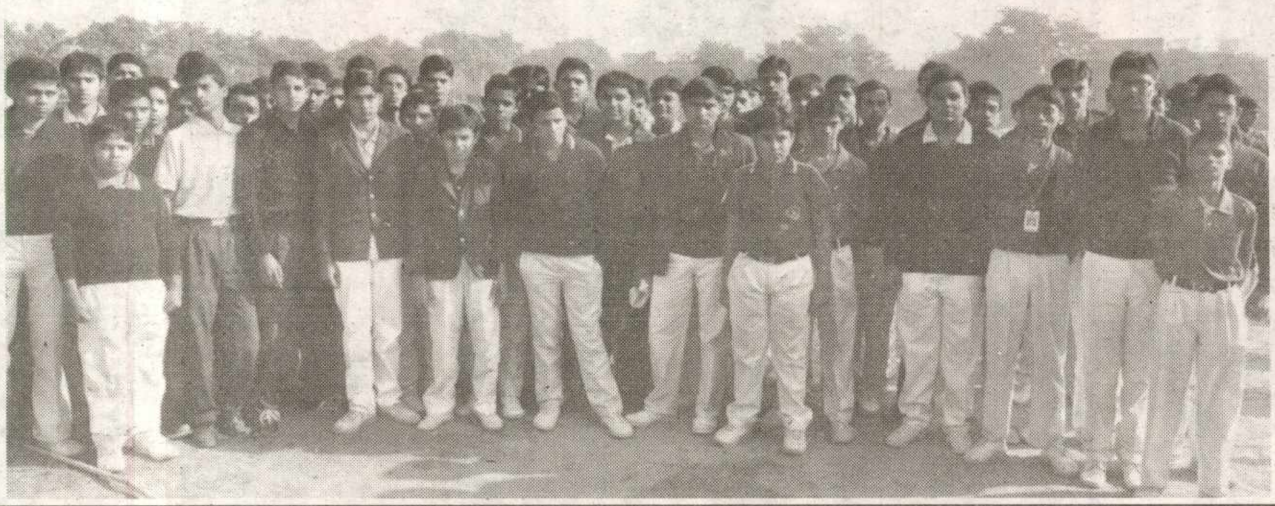

thearyasamaj.org

रोहतक में विशाल युवा शक्ति सम्मेलन चित्रों के झरोखे से

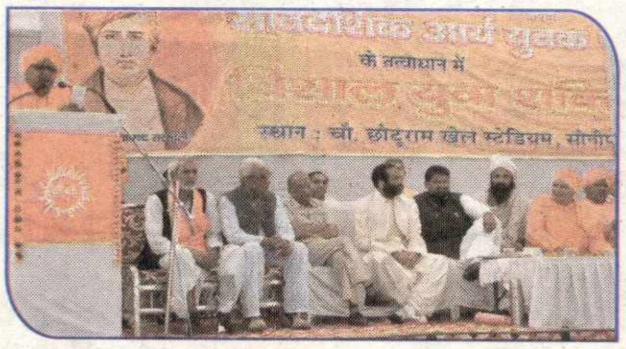

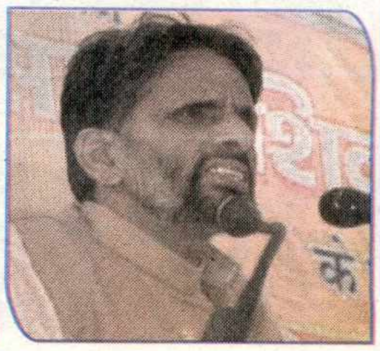
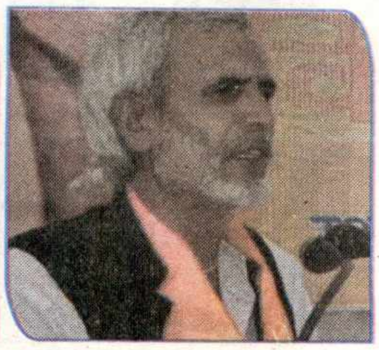

thearyasamaj.org

रोहतक में विशाल युवा शक्ति सम्मेलन चित्रों के झरोखे से

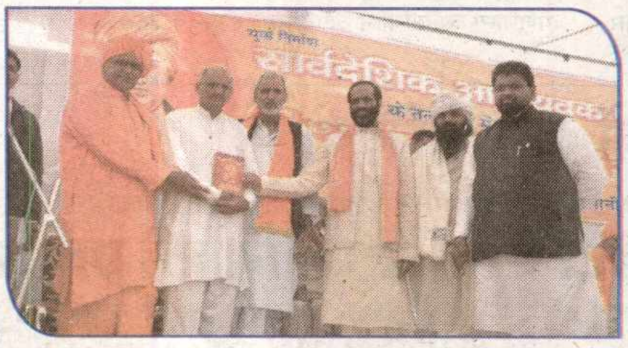
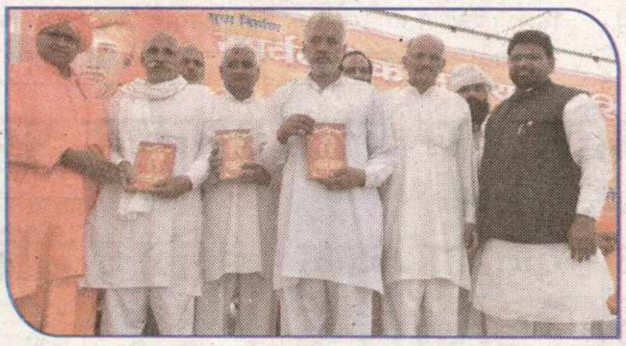

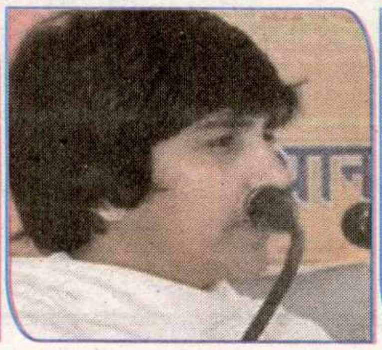

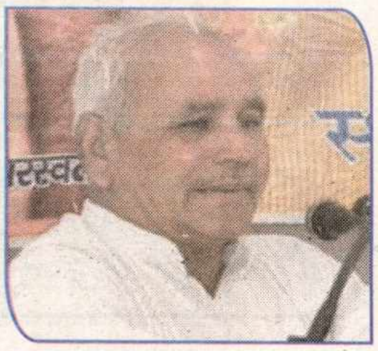

आर्य समाज विशाखा एन्क्लेव पीतमपुरा दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भव्य सम्मान

आर्य समाज विशाखा एन्क्लेव पीतमपुरा के विशाल प्रांगण में 23 नवम्बर, 2014 को सायं 5 से 8 बजे तक आयोजित विशेष अभिनन्दन समारोह में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का शॉल उढ़ाकर स्मृति चिन्ह भेंट कर तथा माल्यार्पण द्वारा अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने भव्य स्वागत सम्मान किया। सर्वश्री सत्य प्रकाश आर्य, संरक्षक श्री रण सिंह राणा प्रधान श्री ओम प्रकाश गुप्ता मंत्री, श्री मामचन्द्र रिवाड़िया, माता कृष्ण वाला संरक्षक डॉ. धर्मवीर आर्य, श्री राजीव आर्य आर्य समाज रोहणी श्रीमती उर्मिल आर्या रोहणी, श्रीमती रेखा गुप्ता स्थानीय पार्षद श्री राजेन्द्र कुमार आर्य, हांसी वाले, श्री लोकेन्द्र शास्त्री, आर्य सुनील, श्री प्रेमपाल शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, श्री छवि कृष्ण, दिनेश गुप्ता, श्री अभय देव शास्त्री, श्री कंवर पाल शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर आर्य समाज विशाखा एन्क्लेव के पुरोहित आचार्य धूम सिंह शास्त्री जी को विशेष सेवाओं के लिए शॉल, स्मृति चिन्ह तथा माल्यार्पण द्वारा सम्मानित किया गया। मंच का कुशल संचालन मंत्री श्री ओम प्रकाश गुप्ता ने किया।

इस अवसर पर आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने प्रमुख वक्ता के रूप में विचार व्यक्त करते हुए स्वामी आर्यवेश जी का विस्तार से परिचय देते हुए कहा कि वे स्वामी जी को 1971 से जानते हैं जब से मैंने शक्ति नगर में आर्य समाज के पुरोहित का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी का जीवन आर्य समाज को समर्पित है उन्होंने युवकों को संस्कारित करने के लिए बहुत काम किया है तथा हजारों नव-युवकों को आर्य समाज से जोड़ा है। जब से वे सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने हैं देश के आर्यों में उत्साह की लहर है और प्रतिदिन ही देश में कहीं न कहीं उनका स्वागत तथा सम्मान किया जा रहा है। स्वामी जी द्वारा आर्य समाज का नेतृत्व सम्भालने के साथ ही आर्य समाज निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने आर्य समाज में स्वामी आर्यवेश जी के तेजस्वी नेतृत्व की प्रबल प्रशंसा की उन्होंने कहा कि स्वामी जी पूरी निष्ठा और परिश्रम के साथ आर्य समाज के लिए पूर्ण रूप से समर्पित हैं तथा आर्य समाज के संगठन को एकीकृत करने तथा मजबूत बनाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। अनिल आर्य ने आचार्य धूमसिंह शास्त्री की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे गो-सेवा के लिए समर्पित हैं और पुरोहित कार्य से मुक्त होकर एक बड़े कार्य के लिए अग्रसर हो रहे हैं। डॉ. छवि कृष्ण शास्त्री ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के निराकरण के लिए जुट जाना चाहिए।

इस अवसर पर अपने धारा प्रवाह ओजस्वी उद्बोधन में स्वामी जी ने आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि आज सबसे प्रबल आवश्यकता आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाने की है तथा आर्य समाज के संगठन को एक सूत्र में पिरोने के लिए हम कृत संकल्प हैं और इस कार्य में आप सबका सहयोग अपेक्षित है। अवैदिक विचारों को प्रसारित करने वाली शक्तियों से लड़ने के लिए संगठित होना अत्यन्त आवश्यक है। आज चारो तरफ आसुरी शक्तियों का बोलबाला है वे चारों तरफ सिर उठा रही है। स्वामी जी ने कहा कि अभी कुछ दिन पूर्ण षड्यन्त्रकारी सन्त रामपाल की घटना आप सबके सामने है। रामपाल के काले कारनामे जनता के सामने खुल गये है इस प्रकार के एक नहीं अनेकों रामपाल देश में अनर्गल बातों का प्रचार करके भोली भाली धर्मभीरू जनता को गुमराह कर रहे हैं और लूट रहे हैं। इनसे निपटना जरूरी है। आज पूरे देश में इस प्रकार के लोगों के विरुद्ध जन-जागरण करने की आवश्यकता है। अभी रोहतक में तेजस्वी युवा भारत के निर्माण के लिए एक विशाल रैली में हम उद्बोधन देकर आये हैं जिसमें दस हजार युवाओं ने भाग लिया। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज के प्रयासों से लोगों में जागृति आ रही है और लोग जागरूक हो रहे हैं। विशाल रैली में युवाओं को नशाखोरी, अश्लीलता कन्या भ्रूण हत्या तथा पाखण्ड जैसी सामाजिक बुराईयों से दूर रहने के लिए शपथ दिलवाई गई। सभी से देशभक्ति सामाजिकता अपनाने के लिए संकल्प पत्र पढ़वाये गये। स्वामी जी ने कहा कि मैं सार्वदेशिक सभा की तरफ से राष्ट्रीय स्तर पर इन मुद्दों पर व्यापक जन जागरण अभियान चलाना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि दिल्ली की जनता को इस कार्य में बढ़-चढ़ कर सहयोग करना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जन-चेतना का कार्यक्रम आर्य समाजों को अविलम्ब प्रारम्भ कर देना चाहिए क्योंकि यह एक ऐसी बुराई है जिससे समाज का ताना-बाना बिखर रहा है। स्वामी जी ने आर्य समाज के पदाधिकारियों तथा आर्य जनता का सम्मान समारोह आयोजित करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने आर्य समाज की विशेष प्रशस्ति की कि आपने एक शानदार परम्परा प्रारम्भ की है कि आपलोग अपने विद्वान पुरोहित का अभिनन्दन कर विदा कर रहे हैं। हमें अपने विद्वानों पुरोहितों, प्रचारकों, भजनोपदेशकों को सम्मानित करना चाहिए और यदि ऐसा हो पया तो आप देखेंगे कि आर्य समाज का कार्य स्वतः बढ़ने लगेगा। अन्य आर्य समाजों को इस समाज से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने आर्य समाज के प्रधान, मंत्री तथा पूरी टीम को इस शानदार आयोजन के लिए धन्यवाद दिया उन्होंने आर्य समाज के संरक्षक श्री सत्यप्रकाश आर्य जी की विशेष प्रशंसा की कि उन्होंने अपनी समाज में युवाओं को आगे बढ़ाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस अवसर पर श्रीमती रेखा गुप्ता, वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश श्री यतीन्द्र शास्त्री, श्री आर्य सुनील, कमल पाल शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

विशाल युवा शक्ति सम्मेलन समाचार पत्रों की सुर्खियों में

डेरों के अवैध निर्माण गिराने की सरकार से की मांग

आर्य युवक परिषद चलाएगा जागरूकता अभियान

आर्य युवक परिषद के युवा शक्ति सम्मेलन में विभिन्न जिलों से आए विद्यार्थी

चरित्र व नैतिक मूल्य अपनाने की शपथ

स्वामी आर्यवेश ने कहा, पाखंड के खिलाफ अभियान चलायेगा आर्य समाज

युवा-शक्ति सम्मेलन में आर्यसमाजियों ने भरी हुंकार, बाल

धर्म की आड़ में गोरखधंधा डेरों की जांच कराए सरकार

धर्म का लबादा ओढ़ने वाले हों बेनकाब

7 हजार गांवों में चलेगा जागरूकता अभियान

युवा शक्ति सम्मेलन में लिया बुराइयां छोड़ने का संकल्प

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिसंबर में छात्रों को दिलाएगी संकल्प, फरवरी में पाखंड पोल-खोल यात्रा

thearyasamaj.org

आस्था का बवाल

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

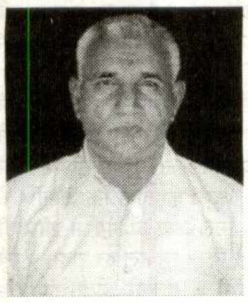

5 से 11 नवम्बर, 2014 तक बवाली बाबा रामपाल ने उच्च न्यायालय, पुलिस प्रशासन व हरियाणा सरकार को अपनी शर्मनाक हरकतों से आस्था की आड़ में जैसा छकाया है उसे पूरा देश मीडिया के माध्यम से देखता रहा है। पहले करौंथा (रोहतक) का सतलोक आश्रम और अब बरवाला (हिसार) का सतलोक आश्रम गुरुडम, पाखण्ड, धोखाधड़ी, तन्त्र-मन्त्र, व्यभिचार, गुण्डागर्दी के साथ-साथ देशद्रोह के आरोप में बदनामी का दंश झेल रहा है। कारण, लोकेषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा के वशीभूत होकर रामपाल ने अपने आश्रम की जो व्यूह रचना की, अपने प्रचार-तन्त्र की जो आधारशिला रखी उसमें वेद, दयानन्द और आर्य समाज के विरुद्ध एक सोची-समझी नीति अपनाई। हरियाणा आर्य समाज का गढ़ है अतः इस गढ़ पर आक्रमण कर उसने पौराणिक जनता की आस्था, श्रद्धा और विश्वास को जीतने का प्रयास किया। अपने को कबीर पंथ से जोड़कर तथा तन्त्र-मन्त्र का आश्रय लेकर भी उसने भोली-भाली जनता को आकर्षित करने की चाल चली। 1995 से अपने तन्त्र को उसने इतना बहुआयामी और व्यापक बना लिया कि सुशिक्षित समुदाय भी उसका शिकार बनता चला गया। उसके अनुयायी हरियाणा से भले कम रहे हों लेकिन राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और नेपाल में उनकी संख्या लाखों में है। 19 नवम्बर को पुलिस एक्शन के दौरान रामपाल के जो 459 संदिग्ध कमांडों हिरासत में लिये गये थे उनमें हरियाणा के 116, राजस्थान के 118, उत्तर प्रदेश के 83, मध्य प्रदेश के 72, बिहार के 10 व नेपाल के 3 हैं। जो जानकारी छन कर मीडिया में आई है उसके अनुसार श्रद्धा के कारण नहीं बल्कि सांसारिक उलझनों, बीमारियों, परेशानियों, तंगियों, मुसीबतों से मुक्त होने का समाधान पाने को अधिकांश लोग उसके आश्रम की शरण लेते रहे हैं।

बाबा की फ़ौज (प्रचारक) झूठे प्रचार-तन्त्र से उसे कबीर का अवतार, ईश्वरावतार, सिद्ध तान्त्रिक, चमत्कारी बाबा प्रचारित कर आम जनता को सम्मोहित करती रही है जिसका शिकार होकर जनता आश्रम की ओर खिंची चली आती रही है। आश्रम में सेवा-सुश्रुषा का व्यापक तामझाम देखकर जनता की आँखें फटी रह जाती थीं। जब सत्संग के दौरान जाप और एक नाम दिए जाने की प्रक्रिया शुरू होने वाली होती थी तो रामपाल एक सफल मदारी की तरह, तकनीक व लाईट का आश्रय लेकर कभी विलुप्त तो कभी प्रकट होने लगता था, विविध लाईटों के मध्य उसका रूप भी अलग-अलग दिखने लगता था, जिस सिंहासन पर बैठकर वह भक्तों के सामने आता था उसे ऊपरी मंजिल से लिफ्ट द्वारा नीचे लाया जाता था, भूमिगत हाइड्रोलिक लिफ्ट द्वारा बुलेटप्रूफ शीशे से घिरे मंच पर जब यह सिंहासन आता था तो उनके प्रचारक इसे दैवीय चमत्कार के रूप में प्रचारित करते थे। आश्रम के सेवादार अनेक हथकंडे अपना कर बाबा के भगवान सरीखे कारनामों का गुणगान जनता के बीच करते रहते थे। कहा जाता रहा है कि बाबा पलक झपकते ही यहाँ बैठे-बैठे पृथ्वी ही नहीं किसी भी ग्रह पर जा सकते हैं। यह अफवाह भी फैलायी जाती रही कि बाबा जब सुरती में आते हैं तो प्रवचन सुनाते-सुनाते अचानक आसमान में उड़ने लगते हैं, वाणी बोलते हुए, दोनों हाथ ऊपर उठाकर उठने लगते हैं व संगत के ऊपर मंडराने लगते हैं। खुद को कबीर का अवतार और भगवान प्रचारित करने का दावा वह कई बार कर चुका है।

आर्य समाज उसके विचारों और कारनामों की निरन्तर पोल खोलता रहा इसलिए वह भी निरन्तर आर्य समाज के विरुद्ध आग उगलता रहा है। इस विरोध में वह इतना आगे बढ़ गया कि सत्यार्थप्रकाश और वेदों में भी उसने असत्य ढूंढ़ना शुरू कर दिया, दयानन्द के आदर्श चरित्र में भी उसे दोष दिखने लगे, आर्य समाज के इतिहास को जानने-समझने की भी उसने जरूरत नहीं समझी। तर्क और विवेक को अलग रख उसने आर्य समाज को तरह-तरह से बदनाम करना शुरू कर दिया और पूरे-पूरे पृष्ठ के विज्ञापन अखबारों में देने शुरू कर दिये। जब आर्य समाज ने इस सन्दर्भ में उसे ललकारा, शास्त्रार्थ की चुनौती दी, संवाद के लिए आमंत्रित किया तो उसने घोर उदासीनता, धूर्तता, लापरवाही का परिचय दिया। आर्य समाज ने उसके विचारों को खुली चुनौती दी लेकिन इसे भी उसने नहीं स्वीकारा। वह पैसे के बल पर आर्य समाज को नीचा दिखाने की कोशिशों में लगा रहा। अन्ततः उसे उखाड़ फेंकने के लिए आर्य समाज ने पूरी तरह अपने को झोंक दिया। उसी की परिणति के परिणाम स्वरूप आज रामपाल जेल में है।

समाचार पत्रों में प्रकाशित खबरों के अनुसार 500 से अधिक पुलिसकर्मी और उनके परिवार वाले वर्षों से रामपाल में आस्था रखते रहे हैं, प्रशासनिक अधिकारी व राजनेता भी उनके निकट सम्पर्क में रहे हैं। जाहिर है इन लोगों के मन में बाबा रामपाल के लिए साफ्ट कार्नर रहा होगा। इसी का परिणाम है कि एक बाबा को पकड़ने में असफल पुलिस व प्रशासन को जब हाई कोर्ट ने लताड़ा तब उन्हें होशं मे आकर सक्रिय होना पड़ा। चालीस हजार से अधिक जवानों को बरवाला के सतलोक आश्रम की घेरेबंदी के लिए तैनात करना पड़ा। इनमें चण्डीगढ़ पुलिस सहित पंजाब, हरियाणा और केन्द्रीय सुरक्षा बलों (रैपिड एक्शन फोर्स) के जवान शामिल थे। इससे पूर्व पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट सहित शहर की सुरक्षा पर चंडीगढ़ प्रशासन को अब तक 3 करोड़, 29 लाख, 20 हजार, 639 रुपये का खर्च उठाना पड़ा है। चण्डीगढ़ से रामपाल के 50 हजार समर्थक पहुँच गये थे जिनके पास एसिड पाउच, लाठियाँ व कई घातक हथियार थे। शहर को बचाने के लिए 4 व 5 नवम्बर को विभिन्न स्थानों पर चण्डीगढ़ पुलिस के 3160 जवानों की तैनाती की गई थी। ये समर्थक रामपाल को हाईकोर्ट में पेश किये जाने के आदेशों के खिलाफ प्रदर्शन करने चण्डीगढ़ पहुँचे थे। जाहिर है कि रामपाल को गिरफ्तारी से बचाने के लिए इन समर्थकों ने कोई कसर न उठा रखी होगी। देखने में भी यही आया है कि लगभग दो-तीन दिन तक इन उग्र अनुयायियों ने पुलिस को आश्रम के निकट फटकने नहीं दिया। वे खुद तो खतरनाक हथियारों से लैस थे ही, हजारों महिलाओं व बच्चों को ढाल बनाकर आश्रम के बाहर बैठा दिया गया था। जब चण्डीगढ़ में उग्र अनुयायियों से निपटने के लिए चण्डीगढ़ पुलिस को 3.29 करोड़ खर्च करने पड़े हैं तो बरवाला एकशन पर 60-65 करोड़ से कम क्या खर्च हुए होंगे?

जरूरत संत रामपाल को सींखचों के पीछे पहुँचाने की इतनी नहीं है जितनी कि उसके साम्राज्य के तिलस्म को खंगालने की है, उसके प्रचार तन्त्र को नेस्तनाबूद करने की है। आस्था, श्रद्धा व विश्वास, की आड़ में पल रहे पाखण्ड, आडम्बर व अन्धविश्वास को नष्ट करने की है, आश्रम में इकट्ठे हुए कमांडों की धरपकड़ करने की है, आश्रम में पनप रहे खुले व्यभिचार को सामने लाने की है, आश्रम की अकूत धन-सम्पदा व संसाधनों को जुटाने के पीछे चल रहे मनी-लॉड्रिंग के खेल को समझने की है। रामपाल को गिरफ्तार करके सरकार, प्रशासन, पुलिस व खुफिया तन्त्र की जिम्मेदारी बजाय खत्म होने के बढ़ गई है। इस समूचे संदर्भ की निष्पक्ष जांच कराकर उस पर श्वेत पत्र निकालने की महती आवश्यकता है। केन्द्र सरकार को भी सक्रियता दिखाते हुए श्रद्धा, आस्था, विश्वास की आड़ में पल्लवित हो रहे पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास पर ठोस अंकुश लगाने के लिए केन्द्रीय कानून बनाना चाहिए जिसकी मांग वर्षों से उठती रही है।

यहाँ सवाल यह उठता है कि बाबा रामपाल को इस हद तक जाने की छूट आखिर मिली कैसे?हरियाणा सरकार और प्रशासन का तर्क है कि आश्रम में आये 15 हजार श्रद्धालुओं की जान को बचाना उसकी प्राथमिकता थी जिनकी आड़ में बाबा के कमांडों कहीं तक भी जा सकते थे। इस तर्क के पीछे सरकार, प्रशासन और पुलिस की यह नाकामी स्पष्ट झलकती है कि चण्डीगढ़ की घटना से सबक सीखकर वह सतर्क व सक्रिय नहीं हुई। वह रामपाल से संवाद करने व उसे समझाने में भी असफल हुई। उसका गुप्तचर विभाग भी आश्रम में चल रही तैयारियों से अनभिज्ञ रहा। रामपाल की जाहिर हठधर्मी को देखते हुए आश्रम में 15-20 हजार अनुयायियों के जुट जाने पर भी नियंत्रण नहीं रखा जा सका। आश्रम में घातक हथियार लायसैंसी व गैर-लायसैंसी राइफलें, 200-250 गैस सिलेण्डर, तेजाब, गुलेल व कंचे, मिट्टी का तेल भारी मात्रा में कैसे पहुँचा इसकी भी पुख्ता जानकारी सरकार के पास नहीं थी। इस पूरे सन्दर्भ से एक ही बात सामने आती है कि हर स्तर पर पूरी लापरवाही, कोताही व उदासीनता बर्ती गई थी जैसे हरियाणा में सरकार, प्रशासन, पुलिस, खुफिया तन्त्र नाम की कोई एजेंसी ही न हो। इस नाकामी ने रामपाल की गिरफ्तारी की बहादुरी पर पूरी तरह पानी फेर कर रख दिया है। अब रामपाल पर 19 मुकदमें ठोंक कर क्या इस नाकामी पर पर्दा नहीं डाला जा रहा है?रामपाल ने जो विशाल साम्राज्य खड़ा कर लिया है उसे देखते हुए वह 19 क्या 50 मुकदमें झेलने की सामर्थ्य रखता है।

जरूरत संत रामपाल को सींखचों के पीछे पहुँचाने की इतनी नहीं है जितनी कि उसके साम्राज्य के तिलस्म को खंगालने की है, उसके प्रचार तन्त्र को नेस्तनाबूद करने की है। आस्था, श्रद्धा व विश्वास, की आड़ में पल रहे पाखण्ड, आडम्बर व अन्धविश्वास को नष्ट करने की है, आश्रम में इकट्ठे हुए कमांडों की धरपकड़ करने की है, आश्रम में पनप रहे खुले व्यभिचार को सामने लाने की है, आश्रम की अकूत धन-सम्पदा व संसाधनों को जुटाने के पीछे चल रहे मनी-लॉड्रिंग के खेल को समझने की है। रामपाल को गिरफ्तार करके सरकार, प्रशासन, पुलिस व खुफिया तन्त्र की जिम्मेदारी बजाय खत्म होने के बढ़ गई है। इस समूचे संदर्भ की निष्पक्ष जांच कराकर उस पर श्वेत पत्र निकालने की महती आवश्यकता है। केन्द्र सरकार को भी सक्रियता दिखाते हुए श्रद्धा, आस्था, विश्वास की आड़ में पल्लवित हो रहे पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास पर ठोस अंकुश लगाने के लिए केन्द्रीय कानून बनाना चाहिए जिसकी मांग वर्षों से उठती रही है। ऐसा होने पर ही आस्था के बवाल से देश मुक्त रह सकता है। सुनने में यहाँ तक आ रहा है कि अकेला रामपाल ही अपनी किस्म का बाबा नहीं है बल्कि ऐसे डेढ़ सौ-दो सौ बाबा देश में पनप चुके हैं। जो धर्म, अध्यात्म, भक्ति की जड़ों को खोखला करने पर आमादा हैं, वासना और ऐश्वर्य का जीवन जी रहे हैं, आम जनता की आस्था व श्रद्धा का दोहन कर रहे हैं, पाखण्ड और आडम्बर की खेती काट रहे हैं। इनसे देश व समाज को कैसे बचाना है और आश्रमों की आड़ में काले धन को सफेद बनाने वाले खुले व्यापार को कैसे नियंत्रित करना है यह कार्य प्रान्तीय नहीं केन्द्रीय सरकार का है। देश का सशक्त मीडिया भी इस दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

वाई-454/455 कैम्प नं.-1
नांगलोई, दिल्ली-110041
मे.:-9891110040

thearyasamaj.org

प्रसन्नता एक जीवनदर्शन

- श्री ताराचन्द आहूजा

प्रसन्नता मनुष्य के लिए एक अनूठा ईश्वरीय वरदान है। यह हमें स्फूर्ति, उत्साह, उल्लास और विश्वास से भर देती है। एक प्रसन्न चेहरा खिले हुए पुष्प की भांति भीनी-भीनी सुगंध बिखेरता है। प्रसन्नता जीवन के रचनात्मक, सृजनात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण की वाहक होती है। प्रसन्नता अन्तःकरण के सुखद भावों की सहज अभिव्यक्ति है। यदि मन उदारता, दया, प्रेम, क्षमा, संतोष और संवेदना से युक्त हो तो वह प्रसन्नता के रूप में सुखमंडल पर प्रतिबिम्बित हो जाती है। यह हमें प्रकृति के अद्भुत नजारों से भी प्राप्त हो सकती है। शीतल समीर, बहती नदी, खिलते पुष्प, चहकते पक्षी, गुंजन करते भंवरे, गगनचुंबी पर्वतों के मनोहारी दृश्य, खेत-खलिहानों में पसरी हरीतिमा आदि सभी ओर बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य जहां हमें सुकून प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर हमारे स्वजनों, पड़ोसियों तथा मित्रों के संग भी हंसी-खुशी के पल बिताकर हम प्रसन्नता बटोर सकते हैं।

सम्पूर्ण सृष्टि में केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जिसके पास मुस्कराने, हंसने और प्रसन्न रहने की सामर्थ्य है। प्रसन्नता वह द्वार है जहाँ से उन्नति के अनेक पथ निकलते हैं क्योंकि प्रसन्नता का कोई एक निश्चित मापदंड नहीं होता। एक डॉक्टर सफल आपरेशन करने पर, प्रसन्न होता है, वहीं एक माँ अपने नन्हें को दूध पिलाने, नहलाने तथा लोरी सुनाने में अपार आनन्द का अनुभव करती है। जहाँ एक विद्यार्थी को परीक्षा में अच्छे अंकों से सफलता प्राप्त करने पर प्रसन्नता होती है, वहीं एक छोटे बच्चे को खिलौनों से मन बहलाने में खुशी प्राप्त होती है। प्रसन्नता एक ऐसा गुण है जो न केवल व्यक्ति विशेष को ही आनंदित करता है, प्रत्युत उसके आसपास का सम्पूर्ण वातावरण भी सुहासित और प्रफुल्लित हो जाता है। तन के स्वस्थ रहने, मन के संतुलित रहने और आत्मा के परिष्कार के लिए प्रसन्नता एक टॉनिक की तरह है।

महापुरुषों का मानना है कि संसार में मुख्य रूप से पाँच प्रकार के सुख होते हैं - निरोगी काया, धन की भरमार, सुसंस्कारित भार्या, आज्ञाकारी संतान और विद्या की प्राप्ति। जिसके पास ये सब वस्तुएँ हों, उसे परम सौभाग्यशाली कहा जाता है, क्योंकि इनसे ही मन को प्रसन्नता प्राप्त होती है। पर यह कथन भी आंशिक सत्य ही है क्योंकि यदि ऐसा होता तो रावण, कंस और हिरण्यकश्यपु इस जगत् के सर्वाधिक प्रसन्न व्यक्ति होते। वस्तुतः आंतरिक प्रसन्नता का सम्बन्ध हमारी आत्मा से होता है और आत्मा किसी भी बाह्य पदार्थ की मोहताज नहीं होती। एक साधु-संत के पास भौतिक पदार्थों का सर्वथा अभाव होता है, फिर भी वह सदैव प्रसन्नचित और आनंदित रहता है। इच्छाओं की आपूर्ति के कारण मनुष्य का मन उद्विग्न हो जाता है जिससे उसकी प्रसन्नता में विघ्न पड़ता है। इसलिए कहा जाता है कि एक कामनारहित मनुष्य ही प्रसन्नता के भवन में प्रवेश पा सकता है।

प्रसन्नता सभी सद्गुणों की जननी है। चित्त की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता को जन्म देती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति दीर्घायु होता है। प्रसन्नता को हम जितना बांटते हैं, वह उतनी ही अधिक मात्रा में लौटकर हमारे पास आती है। प्रसन्नचित्त व्यक्ति अपने कार्य में असफल नहीं होता। सदैव प्रसन्नचित्त रहने से अच्छे विचारों की उत्पत्ति होती है। संत-महात्मा तो यहाँ तक कहते हैं कि प्रसन्नता ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है जिसकी तरंगों से समूचा परिदृश्य आनन्द से सराबोर हो जाता है।

ज्ञानीजन कहते हैं कि मानवजीवन का दर्शन है प्रसन्नता और सुखीजीवन का आधार भी प्रसन्नता ही है। प्रसन्नता वरदान है तो खिन्नता अभिशाप है। प्रसन्नता एक औषधि है जो प्रतिकूल परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाले तनाव एवं विषाद से हमें बचाती है। मानवमन की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि सफलता और अनुकूल परिस्थितियों में वह प्रसन्न रहता है और असफलता तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में अशान्त। गीता में भगवान् कहते हैं कि अंतःकरण की प्रसन्नता होने पर व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन में दुःखों का अभाव हो जाता है और प्रसन्नचित्त रहने वाले व्यक्ति की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में स्थिर हो जाती है।

प्रसन्नता के विषय में गांधी जी का कथन है - "प्रसन्नता हमारे मन की गाँठ खोल देती है। अंतःकरण से उद्गमित प्रसन्नता ऐसी पावन गंगा है जो सबको शीतलता प्रदान करती है। भीतर के विषाद और अवसाद प्रसन्नता के तेज झोंकों से रूई के हल्के फोहों की तरह उड़ जाते हैं।" सुविख्यात लेखक स्वेट मार्डन का कहना है - "जो व्यक्ति प्रसन्न स्वभाव का होता है वह निश्चय ही किसी भी कठिन कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करके संतोषप्रद परिणाम प्राप्त कर सकता है। यहाँ तक कि एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति जीवन के अभिशाप को वरदान में बदलने की क्षमता रखता है।" भगवान् वेदव्यास जी कहते हैं कि चित्त में प्रसन्नता का आगमन होने से मनुष्य के सब दुःख दर्द मिट जाते हैं और प्रसन्नचित्त पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही ईश्वर में स्थिर हो जाती है। शरीरविज्ञानियों का अभिमत है कि खिलखिला कर हंसने से मनुष्य का तन और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं।

हंसना और प्रसन्नचित्त रहना आज के तनावग्रस्त जीवन की अनिवार्यता बन गई है। हंसने से फेफड़े मजबूत होते हैं और मन के विकार दूर होते हैं। हंसने से मन हल्का-फुल्का हो जाता है और व्यक्ति अनेक प्रकार के रोगों से मुक्ति पा लेता है। इस सम्बन्ध में 'सैटरडे रिव्यू' के संपादक नॉर्मन काजिन्स का उदाहरण हमारे सामने है। उन्होंने अपने लकवे की बीमारी से निजात पाने के लिए हास्य का अभ्यास किया जिसे 'लॉफ्टर थेरेपी' के नाम से जाना जाता है। उनका कहना है कि औषधि के साथ यदि रोगी को हास्य का टॉनिक भी मिल जाए तो रोग से शीघ्र ही छुटकारा पाया जा सकता है। यही कारण है कि आजकल हर शहर-कस्बे में हास्य-क्लब खुल गए हैं, जहाँ लोग हंसी के फव्वारे छोड़ते हुए देखे जा सकते हैं। तनाव से मुक्ति पाने के लिए हास्य चिकित्सा एक प्रभावकारी उपचार है, जिसमें कुछ भी व्यय नहीं करना पड़ता।

यह धारणा सही नहीं है कि विपन्नता, अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियाँ मनुष्य की प्रसन्नता को हर लेती हैं। हम देखते हैं कि हमारे आस-पास ऐसे बहुत से लोग हैं जो रूखी-सूखी खाकर भी खुश रहते हैं और साथ ही ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो सब प्रकार से सुविधा सम्पन्न होने के बावजूद अपने दुःखों का रोना रोते रहते हैं। प्रसन्नता और संवेदना का परस्पर गहरा और सीधा सम्बन्ध होता है। यदि मनुष्य की विचारधारा सकारात्मक है और मन संवेदनशीलता से लबालब है तो प्रसन्नता को हमारे द्वार पर आने से कोई रोक नहीं सकता। जीवन में प्रसन्नता का आगमन तब और भी सहज हो जाता है जब आदमी लोभ-लालच तथा स्वार्थपूर्ति की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठ जाता है। ऐसा व्यक्ति सूफी संत बाबा शेख फरीद की इस सूक्ति पर चलता हुआ प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करता है -

देख पराई चूपड़ी मत ललचावे जी।
रूखी-सूखी खा फरीदा, ठंडा पानी पी॥

जिस प्रकार दीपक जलाने से केवल अंधेरे का नाश ही नहीं होता, वरन् अंधेरा स्वयं प्रकाश बन जाता है, उसी प्रकार प्रसन्नता से दुःख भी सुख में बदल जाता है। अतः जो भी सुखी या समृद्ध रहना चाहता है उसको प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। प्रसन्नता कोई बाहरी वस्तु नहीं अपितु अन्तःकरण की वृत्तिविशेष है, उसको जगाना मात्र मनुष्य का कर्त्तव्य है।

-निदेशक, धार्मिक पुस्तकालय, 4/114, एस. एफ. एस., अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-302020

सावधान ! **सावधान !!** **सावधान !!!**

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय
देवेन्द्र कुमार आर्य
विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त
(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)
हवन सामग्री भण्डार
631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)
मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।
2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज के प्रयासों से एक किला और ढहा पाखण्ड का

षड्यन्त्रकारी तथाकथित सन्त रामपाल बरवाला के तलोक आश्रम से पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। रफ्तारी के बाद आश्रम से भारी संख्या में लाठियां, घातक थियार तथा समाज में अवैधा समझी जाने वाली सामग्री ारी मात्रा में बरामद हुई हैं। गुरुडम पाखण्ड, धोखाधड़ी से ैलाया गया रामपाल का साम्राज्य कुछ ही दिनों में ूल-धूसरित हो गया। यदि वह संत या भगवान होता तो मत्कार करके अपने आपको और अपने साम्राज्य को बचा ीता, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

ज्ञातव्य हो रामपाल आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के ति जबरदस्त ढंग से योजनाबद्ध तरीके से अनर्गल प्रचार कर रहा था। आर्य समाज ने 2006 में उसके विरुद्ध मोर्चा खोला और उसकी परिणति उसके जेल जाने के रूप में हुई।

आर्य समाज की तो स्थापना ही महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड को धूल-धूसरित करने के लिए ही की थी और वह यह कार्य निरन्तर कर भी रहा है लेकिन लोकेषणा वित्तेषणा के वशीभूत होकर आज इस प्रकार के पाखण्डी बाबाओं का जाल सा बिछ गया है। आस्था श्रद्धा व विश्वास की आड़ में पल रहे पाखण्ड, आडम्बर व अन्धविश्वास को नष्ट करने की आवश्यकता है जो धर्म को नुकसान पहुँचा रहे हैं और भोली भाली जनता को लूटकर राजा महाराजाओं की तरह जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज इस प्रकार के ढोंगी पाखण्डी, बाबाओं और अवतारों की पोल निरन्तर खोलता रहा है और आगे भी पूरे देश में पाखण्ड को उखाड़ फेंकने के लिए जन-जागरण का कार्य बड़े स्तर पर किया जायेगा। उन्होंने इस पूरे घटनाक्रम पर हरियाणा सरकार की भी प्रशंसा की कि उसके धैर्य और संयम ने एक वीभत्स काण्ड को होने से रोक लिया। नहीं तो रामपाल ने तो पूरी तैयारी सैकड़ों निर्दोष लोगों की हत्या की कर रखी थी। हरियाणा सरकार के इस प्रशंसनीय कृत्य से पाखण्डियों में हलचल मचना स्वाभाविक है। स्वामी जी ने मांग की कि सभी पाखण्डियों तथा डेरों आदि की जाँच होनी चाहिए जहाँ हथियारों या अवैध कृत्यों की सूचना प्राप्त हो।

ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

महर्षि दयानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द व पं० रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान स्मृति,
कन्या भ्रूण-हत्या, अन्धविश्वाश व नशा खोरी के विरुद्ध

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, जीन्द

दिनांक 14 दिसम्बर 2014 प्रातः 10-00 बजे

स्थान : महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम 3705 अर्बन एस्टेट, जीन्द

:: नशाखोरी व कन्या भ्रूण हत्या विरोधी सम्मेलन ::

अध्यक्ष : स्वामी ओमवेश जी
पूर्व गन्ना मंत्री, उत्तरप्रदेश
मुख्य अतिथि : श्री इन्द्रजीत आर्य, प्रधान आर्य समाज, नरवाना
विशेष अतिथि : चौ० मेलाराम दीवाल, कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध समाज सेवी
चौ० धूला राम आर्य, थूआ
चौ० रघुबीर सिंह मलिक समाजसेवी
उद्घाटन : चौ० सुभाष श्योराण
एन.डी. इण्डस पब्लिक स्कूल, जीन्द
मुख्य वक्ता : श्री सत्यव्रत सामवेदी,
अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
स्वामी विजयवेश, गुड़गांव, विरजानन्द आर्य
राममोहन राय, एडवोकेट, पानीपत
चौ० सुबे सिंह, रोहतक, डॉ० यशवीर शास्त्री

:: राष्ट्र रक्षा सम्मेलन ::

अध्यक्ष : स्वामी आर्यवेश जी
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
मुख्य अतिथि : चौ० हरि सिंह सैनी,
पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार
विशेष अतिथि : चौ० बदलू राम आर्य, प्रधान, आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार
उद्घाटन : श्री घनश्याम गोस्वामी, एडवोकेट, जीन्द
मुख्य वक्ता : प्रो० बिट्ठल राव, हैदराबाद
स्वामी प्रणवानन्द, गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली
रणधीर सिंह रेढू, एडवोकेट
दर्शन सिंह, जिला पार्षद, कैथल
श्री बजरंग लाल आर्य, कोषाध्यक्ष, आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार
प्रो० श्योताज सिंह, महामन्त्री बन्धुवा मुक्ति मोर्चा

:: युवा सम्मेलन ::

अध्यक्ष : चौ० वेदप्रकाश बेनीवाल, नाड़ा हिसार) प्रसिद्ध समाजसेवी
मुख्य अतिथि : श्री जयपाल सिंह मलिक, पूर्व निदेशक, नेहरू युवा केन्द्र
विशेष अतिथि : मा० महेन्द्र सिंह श्योकन्द, चेयर मैन विवेकानन्द सी० सै० स्कूल, अंसब
जसमेर पहलवान, नगर पार्षद
पं० शिव नारायण शर्मा, एम.डी. नव दुर्गा सी० सै० स्कूल, जीन्द
उद्घाटन : चौ. सूरजमल आर्य, जुलानी, समाजसेवी
मुख्य वक्ता : स्वामी श्रद्धानन्द पलवल, बहन प्रवेश आर्या व पूनम आर्या,
श्रीमती जगमती मलिक आर्या, सहदेव शास्त्री, देवेन्द्र आर्य,
ब्रह्मचारी दिक्षेन्द्र आर्य, प्रधान, आ० यु० परिषद, हरियाणा,

:: सम्मेलन के संयोजक ::

स्वामी रामवेश, प्रधान नशाबन्दी परिषद्, हरियाणा

ध्वजारोहण : आचार्य सन्तराम आर्य, टिटोली (रोहतक)

:: सम्मान समारोह ::

अध्यक्ष : श्री विरेन्द्र लाठर
संयोजक : मा. सतबीर सिंह आर्य

श्री दीप चन्द, समाज सेवी पानीपत, मा० सुलतान सिंह आर्य, राज नगर, कैथल रोड़, जीन्द, चौ० महेन्द्र सिंह, समाज सेवी, ईगराह, चौ० सुबे सिंह आर्य, बलियावाला (टोहाना), चौ० बलजीत सिंह हुड्डा, भटनागर कालोनी, जीन्द, श्री जनक राज आर्य, योगा गोल्ड मैडलिस्ट, लजवाना खुर्द

:: आमन्त्रित वक्ता, विद्वान व भजनोपदेशक ::

बलबीर शास्त्री, प्रिंसिपल आजाद सिंह, सोनीपत, अतर सिंह आर्य, वान प्रस्थी, चौ. बलवन्त सिंह आर्य, सीसर खरबला, जगदीश सर्राफ, भिवानी, डॉ. भूप सिंह आर्य, भिवानी, लक्ष्मीचन्द आर्य, फरीदाबाद, रामलाल आर्य गुड़गावं, मोहित आर्य, यमुनानगर, यज्ञ के ब्रह्मा पं० ईश्वर चन्द्र शास्त्री, मा० देवराज शास्त्री, प्रसिद्ध भजनोपदेशक सहदेव सिंह बेधड़क, कुलदीप आर्य, बिजनौर, चन्द्र भानु आर्य, हवा सिंह तूफान व सुनील शास्त्री

:: निवेदक ::

कर्ण सिंह रेढू, पं० दयाकृष्ण पुरोहित, चौ० पिरथी सिंह चहल, ठाकुर तेलु सिंह, रविन्द्र पुनियां, डॉ० बलबीर सिंह आर्य, भोम सिंह आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, देवेन्द्र सिंह लोहान एडवोकेट, कैप्टन विरेन्द्र सिंह खटकड़, डॉ. राजपाल आर्य, सतपाल आर्य, नरेश आर्य, जोरासिंह हुड्डा, दयानन्द आर्य, सुर्यदेव आर्य, विद्यासागर शास्त्री, कर्मचन्द फोजी, मा० सुभाष गहलोत, मा० आनन्द प्रकाश आर्य, मा० बलबीर सिंह आर्य, दलबीर आर्य, जिले सिंह आर्य, मा० राधुराम आर्य, मांगेराम मूंढ, कर्मपाल आर्य, बिजेन्द्र आर्य, पवन आर्य, सौदागर चन्द चौपड़ा, सत्या भाटिया आर्या, मा० मोहनलाल आर्य, डॉ० राजेन्द्र यादव, प्रो० कुलवीर सिंह रेढू, प्रिंसीपल नफेसिंह मलिक, प्रो० कर्ण सिंह आर्य, विनीता गुलाटी, धर्मवीर ढिल्लों, जगफूल ढिल्लों, मोलड़राम आर्य, प्रिंसीपल दिलीप सिंह आर्य, अश्विनी कुमार आर्य, प्रो० महावीर सिंह, बालकृष्ण हुड्डा, महेन्द्र पाल आर्य, राजेन्द्र शास्त्री, कैप्टन रामदत्त आर्य, नफेसिंह आर्य, महेन्द्र ढिल्लो, महीपाल ढिल्लो, सुरजमल खटकड़, जीता राम आर्य, श्रीमति वीना आर्या, चौ० जसवन्त सिंह आर्य, शादीपुर (जुलाना), चौ० सुबेर सिंह आर्य, सुरजमल पहलवान, वजीर सिंह आर्य शामलो कलां, रामधारी आर्य खटकड़, धर्मबीर आर्य गोहियां, नवनीत आर्य

सामवेद सम्पर्क सूत्र : 94161-48278, फोन 01681-248638 अथर्ववेद

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता

श्री विश्वबन्धु आर्य जी नहीं रहे

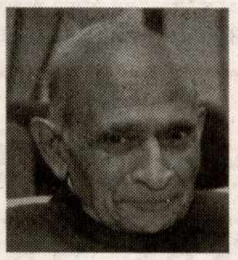

आर्यवीर दल के सक्रिय सदस्य और आर्य समाज के नेता श्री ओम प्रकाश त्यागी तथा लाला रामगोपाल शालवाले के निकट सहयोगी, विश्वबंधु आर्य का दिनांक 27 नवम्बर, 2014 को निधन हो गया है। वे आर्यवीर दल की शाखाओं के मुख्य अनुदेशक रहे थे और उन्होंने आजादी से पहले 1946 में नोआखली, पूर्वी बंगाल में हिन्दू मुस्लिम संघर्ष के दौरान सद्भावना कायम करने तथा राहत कार्य करने के लिए आर्य समाज दीवान हॉल, चांदनी चौक, दिल्ली से आन्दोलन का सफलतापूर्वक प्रबन्धान किया था। वे आर्य समाज दीवान हॉल के मंत्रीके रूप में चुने गये थे। सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को सेवाएं प्रदान कीं। वे अपने पीछे अपनी पत्नी तथा तीन पुत्र और तीन पुत्री छोड़कर गए हैं जो सभी ईश्वर की कृपा से सम्पन्न हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ तथा अन्य कार्यक्रम दिनांक 7 दिसम्बर को आर्य समाज मंदिर मयूर विहार फेस-1 पाकेट-4 में 11 बजे से 4 बजे तक सम्पन्न होंगे।

- डॉ. देवेश गुप्ता, सुपुत्र श्री विश्वबन्धु आर्य

माता यशोदा देवी कालरा का निधन

आर्य समाज चावला कालोनी बल्लभगढ़ के प्रधान श्री नन्दलाल कालड़ा की पूज्या माता श्रीमती यशोदा देवी जी का गत दिनों 92 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि एवं प्रेरणा सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द, माता यति आदि ने माता जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। स्वामी जी ने अपने वक्तव्य में स्व. माता जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि माता यशोदा देवी एक धर्मपारायण, उदारशिला एवं महर्षि दयानन्द की विचारधारा को समर्पित माता थी। उन्होंने अपने संस्कारित जीवन के प्रभाव से पूरे कालड़ा परिवार को आर्य विचारधारा तथा संस्कारों से ओत-प्रोत किया। श्री नन्दलाल कालड़ा बड़े सौभाग्यशाली हैं जिन्हें ऐसी तपस्वी माता मिली और जिनका आशीर्वाद प्राप्त कर वे आर्य समाज के कार्यों में अहर्निश योगदान देते रहते हैं। स्वामी जी ने माता जी की महानता पर विचार रखते हुए उपनिषदों की विशेष शिक्षा का वर्णन करते हुए यक्ष द्वारा पूछे गये प्रश्नों का वर्णन करते हुए माता को महान बताया उन्होंने कहा कि वियोग का कष्ट विशेष होता है और प्रभु इसको सहन करने की आप सबको शक्ति प्रदान करें।

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 05-06 दिसम्बर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 4 दिसम्बर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
04 से 10 दिसम्बर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

धन का सदुपयोग

**पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।**

—ऋ० १०/११७/५

ऋषिः—आङ्गिरसो. भिक्षुः।। देवता—धनान्नदानप्रशंसा।। छन्दः—विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय—धन को जाते हुए कितनी देर लगती है?व्यापार में घाटा हो जाता है, चोर–लुटेरे धन लूट ले जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षणभर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि में दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कंगाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन–सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित–दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन–मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है; यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त है, पर इस इतनी साफ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन–मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ–अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब–कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ–अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन–सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भाँति घूमती फिरती है– आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हम अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसलिए इस 'आज' में ही इतने ग्रस्त हैं कि हम 'कल' को देखते हुए भी नहीं देखते हैं। संसार में लोगों को नित्य धननाश होता हुआ देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक–सा धननाश होने पर इतने रोते–चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन–चक्र को देखें, इस बहते हुए धनप्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

शब्दार्थ—**तव्यान्**=धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह **नाधमानाय**=माँगने वाले सत्पात्र को **पृणीयात् इत्**=दान देवे ही; **पन्थाम्**=सुकृत मार्ग को **द्राघीयांसम्**=दीर्घतम **अनुपश्येत**=देखे। इस लम्बे मार्ग में **रायः**=धन सम्पत्तियाँ **उ हि**=निश्चय से **रथ्याः चक्राः इव**=रथ–चक्रों की भाँति **आ वर्तन्ते**=ऊपर–नीचे घूमती रहती हैं बदलती रहती हैं और **अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते**=एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती रहती है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदाः
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 20 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 25 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।